1

सामाजिक समस्याएँ: अवधारणा एवम् उपागम

सामाजिक समस्या का अर्थ समझने के लिए हमें 'सामाजिक' तथा 'समस्या' शब्द का अर्थ समझ लेना उचित होगा। सामाजिक शब्द का अभिप्राय मानवीय सम्बन्धों, सामाजिक संरचना (ढांचे) एवं संगठन से होता है। समस्या का अभिप्राय ऐसे अवांछनीय एवं अनुचित व्यवहारों अथवा प्रचलनों से है, जो सामाजिक व्यवस्था में किसी न किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न कर देते है।

कुछ निश्चित स्थितियाँ, जिसके समाज पर हानिकारक परिणाम होते है जो कि समाज की सामान्य क्रियान्वयन में बाधा पहुँचाते है। इस प्रकार की हानिकारक स्थितियाँ सामाजिक समस्याएँ कहलाती है। जब सामाजिक मूल्यों और मर्यादाओं का हनन होता है, तो इसके परिणामस्वरूप सामाजिक समस्याओं का उदय होता है। सामाजिक मूल्यों और मर्यादाओं के हनन से समाज में समस्या उत्पन्न होती है जैसा कि सती–प्रथा, दहेज–प्रथा, मादक द्रव्य व्यसन, आतंकवाद, बाल –मजदूरी, बाल–अपराध, भ्रष्टाचार, महिलाओं का उत्पीड़न, पर्यावरण - विघटन इत्यादि।

हालांकि प्रत्येक सामाजिक मूल्य और मर्यादा के हनन को हम सामाजिक समस्या नहीं कह सकते। सामाजिक समस्या समय और क्षेत्र के अनुसार बदलती रहती है। आज के समय सामाजिक चेतना के चलते, धुम्रपान समाज की एक बड़ी समस्या हैं। इसी तरह से 'सती' को मध्यकालीन भारत में समस्या नहीं माना जाता था। हालांकि वर्तमान भारत में इसको बड़ी सामाजिक समस्या के रूप में देखा जाता है।

यह अनिवार्य नहीं है कि एक समाज की कथित समस्या दूसरे समाज के लिए भी सामाजिक समस्या हो। इसी कारण सभी समाज के नियम और मूल्य समान नहीं होते है। जैसे तलाक को कुछ समाजों में तो बड़ी समस्या के रूप में देखा जाता है, पर सभी में नहीं हालांकि कुछ कार्यों को प्रत्येक समाज में हानिकारक माना जाता है; जैसे- हत्या, आंतकवाद, बलात्कार इत्यादि।